स्वाभिमान का टकराव और बल्लू चंपावत का महा-बलिदान

1. वैचारिक मतभेद: जब दो स्वाभिमानी टकराए

अमर सिंह राठौड़ (नागौर के शासक) और बल्लू सिंह चंपावत (हरसोर के ठाकुर) दोनों ही राठौड़ वंश के अद्वितीय और स्वाभिमानी योद्धा थे। लेकिन इन दोनों के बीच एक गहरी वैचारिक खाई थी।

बल्लू चंपावत उम्र और अनुभव में बड़े थे। वे नागौर दरबार के प्रमुख रणनीतिकार थे और मानते थे कि मुग़ल दरबार के साथ सीधी दुश्मनी के बजाय कूटनीति से काम लेना चाहिए। दूसरी ओर, अमर सिंह राठौड़ का स्वभाव अत्यंत उग्र और बेबाक था। वे न तो मुग़ल कायदे मानते थे और न ही किसी की सलाह सुनना पसंद करते थे।

जब 'मटीरे री राड़' (1644) का विवाद हुआ, तो बल्लू चंपावत ने एक मामूली तरबूज के लिए दो राजपूत रियासतों (नागौर और बीकानेर) के खून बहने का विरोध किया। अमर सिंह ने इस सलाह को अपने स्वाभिमान पर चोट माना और बल्लू चंपावत को कड़ी बातें कह दीं। इस वैचारिक अपमान से आहत होकर, बल्लू चंपावत नागौर दरबार छोड़कर अपनी जागीर **हरसोर (डेगाना, नागौर)** लौट गए और दोनों के बीच बातचीत पूरी तरह बंद हो गई।

[REAL HI STORY - Govind Malviya]

2. अमर सिंह की हत्या और मुग़लों का अमानवीय फरमान

25 जुलाई 1644 को आगरा किले (दीवान-ए-खास) में जब अमर सिंह राठौड़ ने मीर बख्शी सलाबत ख़ान को मौत के घाट उतारा, तो शाहजहाँ ने धोखे से उनके साले अर्जुन सिंह गौड़ के हाथों अमर सिंह की हत्या करवा दी।

हत्या के बाद शाहजहाँ का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने एक अमानवीय और खौफनाक फरमान जारी किया:

"अमर सिंह के शव (धड़) को आगरा किले की 'बुखारा बुर्ज' पर लटका दिया जाए। इसे चील-कौवे खाएंगे और कोई भी हिंदू इसका अंतिम संस्कार नहीं कर पाएगा।"

किले के चारों ओर हजारों मुग़ल सैनिकों का कड़ा पहरा लगा दिया गया।

3. हाड़ी रानी जसकंवर की पुकार और बल्लू चंपावत की प्रतिज्ञा

जब आगरा से यह भयंकर खबर मारवाड़ पहुँची, तो हर कोई सन्न रह गया। अमर सिंह की पत्नी **हाड़ी रानी (जसकंवर)** सती होने के लिए पति के शव का इंतज़ार कर रही थीं, लेकिन शव मुग़लों के कब्जे में था। उन्होंने मारवाड़ के वीरों को ललकारा।

यह खबर हरसोर में बल्लू चंपावत तक भी पहुँची। बल्लू चंपावत के पास चुप रहने का विकल्प था, क्योंकि अमर सिंह से उनकी पुरानी अनबन थी। लेकिन उस स्वाभिमानी क्षत्रिय का खून खौल उठा। उन्होंने अपने व्यक्तिगत मतभेदों को एक झटके में दरकिनार कर दिया और इतिहास के पन्नों पर दर्ज होने वाली यह अमर बात कही:

"अमर सिंह से मेरी दुश्मनी ज़िंदे अमर सिंह से थी। आज बात एक व्यक्ति की नहीं, मारवाड़ की आन-बान और राठौड़ों के सम्मान की है। मेरे शरीर में खून की आखिरी बूंद रहते हुए, मेरे राजा का शव मुग़लों के पहरे में नहीं सड़ेगा!"

[REAL HI STORY - Govind Malviya]

4. आगरा किले पर आत्मघाती हमला (The Great Saka)

बल्लू चंपावत ने तुरंत अपने साथ लगभग 500 से 700 वफ़ादार राठौड़ वीरों को इकट्ठा किया। सभी ने केसरिया बाना पहना (जिसका अर्थ था कि वे जीवित वापस नहीं लौटेंगे) और आगरा की तरफ कूच कर दिया।

आगरा किले के मुख्य द्वार (अमर सिंह दरवाजा) पर पहुँचते ही इन मुट्ठी भर राजपूतों ने मुग़ल फौज पर ऐसा अप्रत्याशित और खौफनाक हमला किया कि मुग़ल सैनिकों के होश उड़ गए। बल्लू चंपावत की तलवार गाजर-मूली की तरह मुग़लों को काटते हुए सीधे 'बुखारा बुर्ज' की तरफ बढ़ रही थी।

[REAL HI STORY - Govind Malviya]

5. शव की वापसी और महा-बलिदान हजारों मुग़ल सैनिकों के घेरे को चीरते हुए बल्लू चंपावत उस बुर्ज तक पहुँच गए जहाँ अमर सिंह का शव टंगा था। उन्होंने मुग़लों को उलझाए रखा और अपने साथियों की मदद से शव को किले से सुरक्षित बाहर निकाल लिया।

अमर सिंह का शव यमुना किनारे हाड़ी रानी जसकंवर तक पहुँचा दिया गया, जहाँ रानी ने सती प्रथा का पालन किया। लेकिन इस शव को निकालने की कीमत बहुत बड़ी थी। बल्लू चंपावत और उनके सैकड़ों राठौड़ वीर आगरा किले के प्रांगण में लड़ते-लड़ते मुग़ल सेना के हाथों वीरगति को प्राप्त हुए।

इतिहास में बल्लू चंपावत का यह बलिदान यह सिखाता है कि राष्ट्र और कुल के सम्मान के आगे आपसी मतभेद और निजी रंजिश की कोई अहमियत नहीं होती।

[REAL HI STORY - Govind Malviya]

📚 प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत (Primary Sources)

1. **मुहणौत नैणसी री ख्यात (संपादक: बद्रीप्रसाद साकरिया)**
    - **भाग / खंड:** भाग 2
    - **पृष्ठ संख्या:** 165–170
    - **विवरण:** अमर सिंह व बल्लू चंपावत की अनबन, हरसोर गमन और आगरा किले पर राठौड़ों के हमले का प्रामाणिक समकालीन विवरण।
2. **जोधपुर राज्य का इतिहास (डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा)**
    - **भाग / खंड:** भाग 1
    - **पृष्ठ संख्या:** 422–428
    - **विवरण:** मटीरे री राड़, सलाबत ख़ान व अमर सिंह की हत्या, और बल्लू चंपावत द्वारा शव छुड़ाने के युद्ध का प्रामाणिक विवरण।
3. **पादशाहनामा (अब्दुल हमीद लाहौरी)**
    - **भाग / खंड:** भाग 2
    - **पृष्ठ संख्या:** 380–384
    - **विवरण:** बुखारा बुर्ज पर शव टांगने का शाही फरमान और राजपूतों के अचानक हुए हमले का मुग़ल आधिकारिक रिकॉर्ड।

- REAL HI STORY
- **लेखक / शोधकर्ता:** Govind Malviya
- **Date:** 30th July 2026
- © 2026 Govind Malviya (REAL HI STORY)